International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in December 2022, iajesm2014@gmail.com

दलहन एवं तिलहन उपज का लागत लाभ विश्लेषण (रतलाम जिले के विशेष संदर्भ में)

गौरव गोखरू, शोद्यार्थी, कॉमर्स विभाग, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर
डॉ. विपिन वागरेचा, एस. प्रोफेसर, कॉमर्स विभाग, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पूर्व तक भारतीय कृषि की दशा अत्यन्त दयनीय तथा असंतोषप्रद थी। प्रति श्रमिक दर एवं प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पाद दर अत्यन्त निचले स्तर पर थी। कृषि उत्पादन की दर निचले स्तर पर होने के कारण राष्ट्र के निवासियों की अनिवार्य आवश्यकता अर्थात् भूख को संतुष्ट करने तक का अनाज भी उत्पादित नहीं हो पाता था। स्वतंत्रता के उपरांत राष्ट्र में विद्यमान खाद्यान्न वस्तु की कमी को दूर करने के लिए कृषि विकास पर बल प्रदान किया गया। वर्ष 1966 में उदय हुए हरित क्रांति के फलतः भारतीय कृषि की दयनीय दशा में सकारात्मक सुधार हुआ। कृषि कार्य को सम्पादित करने के लिए आधुनिक तकनीक को महत्ता प्रदान की गई, उन्नत बीजों के उपयोग में अभिवृद्धि हुई, उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग में गुणात्मक रूप से सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त परम्परागत कृषि यंत्र के स्थान पर कृषक वर्ग द्वारा आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग में अभिवृद्धि हुई है। सिंचाई के साधनों में भी सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। हरित क्रांति से पूर्व तक कृषक वर्ग द्वारा सिंचाई कार्य परम्परागत स्त्रोत जैसे कुएँ, तालाब, डीजल पम्प इत्यादि के द्वारा किया जाता था। वर्तमान में सिंचाई कार्य विद्युत पम्प, नलकूप, नहरों इत्यादि के द्वारा किया जा रहा है। हरित क्रांति के उदय होने से कृषि के संस्थागत एवं तकनीकी परिवर्तन के साथ – साथ सघन एवं विस्तृत कृषि कार्य के फलतः कृषि उपज उत्पादन में आशातीत अभिवृद्धि हो रही है। कृषि कार्य को सेवा कार्य के स्थान पर लाभ का व्यवसाय बनाने के उद्देश्य से वर्ष 1966 में हरित क्रांति का उदय हुआ। हरित क्रांति के उदित होने से पारम्परिक कृषि व्यवहारों की प्रतिस्थापना औद्योगिक इकाईयों के व्यवहारों से किया जाने लगी। परम्परागत संसाधनों के स्थान पर कृषकों द्वारा आधुनिक संसाधनों के प्रयोग से गुणात्मक सुधार कर सघन एवं विस्तृत कृषि कार्य को प्रतिपादित किए जाने लगा। फलतः राष्ट्र में हरित क्रांति से पूर्व खाद्यान्न उपज जो वित्तीय वर्ष 1950–51 में मात्र 5 करोड़ टन थी। वह हरित क्रांति के पश्चात वित्तीय वर्ष 1970–71 में बढ़कर 13.8 टन हो गई। कृषि उपज उत्पादन में प्रतिवर्ष अभिवृद्धि होते हुए वित्तीय वर्ष 2003–04 में 21.35 करोड़ टन तथा वित्तीय वर्ष 2008–09 में 23. 39 करोड़ टन हो गया।

इसके अतिरिक्त अखाद्यान्न फसल जैसे गन्ना, कपास, जूट, चाय, कॉफी, तथा रबर के उत्पादन में पर्याप्त अभिवृद्धि हुई। अन्त में, यह कहना कोई अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि हरित क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि उपज उत्पादन में अभिवृद्धि कर विकासशील भारत ने अन्य विकासशील राष्ट्र की तुलना मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया हैं।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

फसल संरचना :–

फसल संरचना से अभिप्राय क्षेत्रफल के उस अनुपात से है जिसमें किसी विशेष समय पर भिन्न – भिन्न प्रकार की फसल बुआई के कार्य को सम्पादित किया जाता है। इसके अतिरिक्त फसल संरचना विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्र के बढ़ाने या घटाने को भी प्रदर्शित करती है। अर्थशास्त्रीयों का अभिमत है कि फसल संरचना में समय के अनुरूप परिवर्तन कृषक वर्ग की आर्थिक स्थिति को उन्नत करने का कार्य भी करता है।

फसल संरचना को भौतिक कारकों के अंतर्गत क्षेत्र विशेष की मिट्टी, मौसम की स्थिति, वर्षा, आद्रता, जलवायु, सिंचाई की सुविधा एवं साधनों की सुलभता तथा आर्थिक घटकों के अंतर्गत भूमि की उपलब्धता, भूमि में विद्यमान उर्वराशक्ति, जोत का आकार, कृषि उपज उत्पादन का मूल्य एवं प्रभावपूर्ण बचत, जोखिम के विरूद्ध कृषि बीमा, उपभोग के लिए खाद्यान्न, पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता इत्यादि कारक प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का कार्य करते है। इसके अतिरिक्त सरकार जब किसी विशिष्ट उपज के उत्पादन को महत्ता प्रदान करती है, अनुदान राशि घोषित करती है या उपज उत्पादन को हतोत्साहित करती है, अतिरिक्त कर लगा कर कृषि उत्पादन पर रोक लगाती है। सरकार द्वारा इस प्रकार के उठाए गए कदम फसल संरचना को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का कार्य करते है।

भारत में स्वतन्त्रता के उपरांत उदित हुए हरित क्रांति से कृषि विकास के साथ फसल संरचना का भी समुचित विकास हुआ। 20 वीं सदी के प्रारम्भ से ही खाद्य फसलों के अंतर्गत उत्पादित होने वाली फसली क्षेत्र में कमी होती गई। इसके स्थान पर अखाद्य फसल का क्षेत्रफल विस्तृत होता गया। सदी के प्रारम्भ में भारतीय कृषित क्षेत्र के 83 प्रतिशत भाग में खाद्य फसलें एवं 17 प्रतिशत भाग में अखाद्य फसल उगाने का कार्य किया जाता था। हरित क्रांति के अगमान के उपरांत खाद्य एवं अखाद्य फसल का अनुपात 81:19 हो गया।

कृषि यंत्र एवं उपकरण :–

परम्परागत कृषि यंत्रों के माध्यम से कृषि क्षेत्र में वांछित उत्पादन तथा उत्पादकता को प्राप्त करना सहज नहीं है। वर्तमान में पश्चिमी देशों की कृषि समृद्धि का मुख्य तंत्र नवीन कृषि यंत्रीकरण है। कृषि के क्षेत्र में नवीन यन्त्रीकरण के परिणाम स्वरूप पश्चिमी देशों में उत्पादन में वृद्धि हुई है तथा लागत में कमी आई है। प्रायः कृषि के यन्त्रीकरण से आशय कृषि कार्य जो पशुओं अथवा मनुष्य द्वारा सम्पादित किये जाते थे, उसे मशीनों के द्वारा पूर्ण करना। अन्य शब्दों में, कृषि के यन्त्रीकरण में पशु शक्ति अथवा मानव शक्ति का स्थान यन्त्र शक्ति ग्रहण कर लेती है। कृषि यंत्रीकरण की इस विधि में कृषि संबंधी समस्त क्रियाओं का संचालन अर्थात हल चलाने से लेकर फसल काटने तथा बेचने तक यंत्रीकरण का उपयोग किया जाता है।

भारत में जोत का आकार छोटा है वहीं कृषि कार्य में सलग्न आबादी का आकार बहुत बड़ा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत कृषि को विकासशील अवस्था से विकसित अवस्था में प्रवृत्ति करने हेतु अनेक प्रयास किए गए किन्तु नवीन यंत्रीकरण की धीमी गति के कारण कृषि विकास संबंधी किए गए प्रयास विफल रहे। वर्ष 1969 उदय हुई हरित क्रांति के फलस्वरूप पिछले छः दशकों से भारतीय कृषि क्षेत्र में जो परिवर्तन हुआ है उसमें नवीन यंत्रीकरण का महत्वपूर्ण योगदान है। केन्द्र सरकार की वित्तीय सहायता से उत्तरप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडू, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल एवं पश्चिम बंगाल में राज्य सरकारी फर्मों पर यंत्रीकरण पर विशेष बल प्रदान किया गया।

फसल को सिंचित करने के लिए वर्ष 1956 में केवल 57 हजार पम्प थे जो वर्ष 1991–2000 में अंत तक 125 लाख होने का अनुमान था। फसल बुआई से लेकर उपज विपणन तक ट्रेक्टर की उपयोगिता में निरन्तर वृद्धि हो रही है। पम्पों के सेट की तरह भारत में वर्ष 1956 में 12 हजार ट्रेक्टर थे। वहीं वर्ष 2006–07 में देश में लगभग 3.5 लाख ट्रेक्टरों तथा 24791 से अधिक पॉवर टिलर्स की बिक्री हुई। कृषक वर्ग कृषि कार्य को सम्पादित करने हेतु हस्त औजार, बैल एवं मानव चलित यंत्र के स्थान पर विद्युत चलित उपकरण, प्लांटिंग, रीपिंग, हार्वेस्टिंग एवं थ्रेसिंग उपकरण, पावर टिलरों और अन्य विशेषकृत कृषि यंत्रों का उपयोग कर रहे है। नवीन यंत्रीकरण के उपयोग से कृषि श्रम की कुशलता में वृद्धि, न्यूनतम लागत में श्रेष्ठतम उत्पादन, समय की बचत, नवीन रोजगार के अवसरों का सृजन, पड़ती भूमि का उपयोग होने के साथ कृषकों की आय में अशातीत वृद्धि हो रही है।

जिले की प्रमुख कृषि उपज :–

स्वतन्त्रता पश्चात देश में खाद्यान्न की कमी को दूर करने के लिए कृषि विकास पर विशेष बल प्रदान किया गया। वर्ष 1966 में हरित क्रांति के आगमन से कृषि के क्षेत्र में नवीन तकनीकों को अपनाया गया, उन्नत बीजों का प्रयोग बढ़ा, उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग में गुणात्मक सुधार आया, कृषि में यंत्रीकरण का प्रयोग बढ़ा, सिंचाई के साधनों में वृद्धि हुई एवं फसल बीमा जैसी अनेक सुविधाएँ कृषकों को प्रदान की गई। उपर्युक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप खाद्यान्नों के उत्पादन में लगभग 4 गुणा वृद्धि दर्ज की गई।

भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र रतलाम जिला भारत के पश्चिम दिशा में स्थित एक सम्पन्न जिला है। जिले की लगभग 60 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि कार्य को सम्पादित कर जीविका का संचालन कर रहे है। पूर्व वर्णित कृषि भूमि संबंधी आंकडों से स्पष्ट है कि जिले के कृषक लगभग 50 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि पर द्वि–फसल प्राप्त करते है। कृषक वर्ग द्वारा परम्परागत संसाधनों के स्थान पर आधुनिक संसाधनों के द्वारा कृषि कार्य को सम्पादित कर न्यूनतम लागत में अधिकतम उपज प्राप्ति हो रही है। समूचित विपणन व्यवस्था के माध्यम से कृषि उपज उत्पादक कृषक वर्ग को उपज के उचित मूल्य की प्राप्ति हो रही है, जो राष्ट्रीय आय वृद्धि में होने के साथ कृषि विकास का सूचक है।

अन्य जिलों की तर्ज पर रतलाम जिले में भी खरीफ एवं रबी फसल के अंतर्गत खाद्यान्न एवं अखाद्यान्न दो प्रकार की उपज प्राप्त होती है। चुकि अल्प आवश्यकता एवं ग्रामीण आंचल में निवासरत् निवासियों की संख्या सर्वाधिक होने के कारण जिलें में खाद्यान्न उपज की उपयोगिता अधिक थी। समयानुसार हुए परिवर्तन के परिणाम स्वरूप जिलें में अखाद्यान्न उपज की उपयोगिता में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञात हुआ कि खरीफ की फसल के अंतर्गत खाद्य फसल के क्षेत्रफल में प्रतिवर्ष कमी हो रही है। इसके विपरित अखाद्य फसल के उत्पादन में वृद्धि हो रही है। वहीं रबी की फसल कृषकों का रूझान खाद्य फसलों की और अधिक है। अंतः खरीफ की फसल के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिले के कृषक वर्ग अतिरिक्त लाभ अर्जित करने के लिए खाद्य फसल के स्थान पर अखाद्य फसल को अत्यधिक उत्पादित कर रहे है। पूर्णतः वर्षागत जल पर आधारित खरीफ की फसल से जिले में मुख्यतः सोयाबीन, मक्का, तिल, ज्वार, उड़द, मूंगफली, तुअर आदि की उपज प्राप्त होती है। सोया प्रदेश के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त मध्यप्रदेश के रतलाम जिले में तिलहन उपज के अंतर्गत सोयाबीन की उपज अधिक प्राप्त की जाती है।

अक्टूबर–नवम्बर माह से प्रारम्भ होकर मार्च–अप्रैल के माह में प्राप्त होने वाली रबी की उपज पूर्णतः भंडारित वर्षा जल पर आधारित होती है। मानसून की पर्याप्ता से भंडारित जल का स्तर श्रेष्ठ होने की दशा में उपज अधिक व अपर्याप्त मानूसन की स्थिति में की अल्प उपज की प्राप्ति होती है। अध्ययन क्षेत्र में रबी की फसल से गेंहू, चना, राई, सरसों, मटर, अलसी आदि उपज प्राप्त होती है। जिले में रबी की उपज में दलहन की उपज चने की उपज सर्वाधिक होती है। द्वि–फसल प्राप्ति का परिणाम है कि जिलें में दलहन की उपज के अंतर्गत चने के फसल उत्पादन में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है।

जिले में आधुनिक कृषि तकनीक उपयोग का उपज उत्पादन पर प्रभाव :–

प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण वर्तमान युग में उन्नत एवं आधुनिक तकनीक के समुचित प्रयोग के अभाव में न्यूनतम लागत में उपज का अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर समुचित कृषि विकास करना अत्यधिक कठिन कार्य है। कृषि विकास में कृषि आगतों के अतिरिक्त आधुनिक कृषि तकनीक की महती भूमिका है। आधुनिक कृषि तकनीक का मुख्य उद्देश्य परम्परागत विधि से सम्पन्न होने वाले कृषि कार्य को आधुनिक तकनीक से परिपूर्ण कर न्यूनतम लागत में अधिकतम कृषि उपज उत्पादन प्राप्त करने के साथ कृषि कार्य को व्यवसायिक कार्य में परिवर्तित करना है।

वर्ष 1966 के पूर्व कृषि प्रधान भारत में पारम्परिक कृषि कार्य देशी आगत पर निर्भर था। पारम्परिक कार्य विधि में कृषि कार्य कार्बनिक खादों, पुराने कृषि औजारों, साधारण हलों, बैलों इत्यादि के माध्यम से संचालित किया जाता था। हरित क्रांति के आगमन से कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीक को बढ़ावा मिला। आधुनिक कृषि तकनीकी में रासायनिक उर्वरक, खरपतवार, कीटनाशक, कृषि मशीनरी, उन्नतशील बीज, विस्तृत सिंचाई हेतु डीजल एवं विद्युत शक्ति इत्यादि सम्मिलित है।

प्रभावशील आधुनिक कृषि तकनीक के संबंध में भारत सरकार की यह नीति है कि कृषि कार्य में उन्नतशील बीज का उपयोग, गोबर खाद के स्थान पर रासायनिक उर्वरक का उपयोग, बहुफसली कार्यक्रम में वृद्धि, कीटनाशक के उपयोग में वृद्धि, सिंचाई के परम्परागत स्त्रोत के अपेक्षा नवीन संसाधनो से सिंचाई कार्य को बढ़ावा प्रदान करना है। कृषि कार्य में बढ़ती आधुनिक कृषि तकनीक के परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर कृषि उपज उत्पादन में वृद्धि हो रही है वहीं दूसरी ओर आधुनिक कृषि तकनीक के आगत जैसे उर्वरकों, कीटनाशकों, कृषि यंत्रीकरण से संबंधित उद्योगों का तीव्र गति से विकास हो रहा है।

खाद एवं उर्वरक :–

आधुनिक कृषि तकनीक विधि के अंतर्गत कृषि उत्पादन को बढ़ावा प्रदान करने में खाद एवं उर्वरक की महती भूमिका होती है। हरित क्रांति से पूर्व भारतीय कृषक वर्ग द्वारा गोबर की खाद का उपयोग कर कृषि कार्य को सम्पादित किया जाता था। हरित क्रांति से उदय में आए आधुनिक कृषि तकनीक विधि से कृषि क्षेत्र में रासायनिक उवर्रक की उपयोगिता दिन – प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञात हुआ कि राष्ट्र में बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप खाद्यान्न मांग को संतुष्ट करने हेतु रासायनिक उर्वरक के उपयोग नितांत आवश्यकता है। रासायनिक उवर्रक के माध्यम से न्यूनतम लागत में अधिकतम उपज को प्राप्त किया जा सकता है।

कृषि उपज मूल्य में उतार–चढ़ाव के प्रकार एवं प्रभाव :–

प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य प्राप्त होने वाले लाभ की मात्रा को अधिकतम करना होता है एवं व्यवसाय की सफलता का मापदण्ड उस व्यवसाय से उपार्जित होने वाले लाभ की मात्रा होती है। हरित क्रांति के उपरान्त से कृषि सेवा कार्य नहीं अपितु व्यवसाय का रूप धारण कर चुका है। कृषि रूपी व्यवसाय से प्राप्त होने वाले लाभ की मात्रा कृषि उपज उत्पादन तथा उनके बाजार मूल्य पर निर्भर होती है।

सामग्री लागत :–

हरित क्रांति के पश्चात कृषि के क्षेत्र में उदित मान यंत्रीकरण के बढ़ते उपयोग से न्यूनतम लागत में अधिकतम कृषि उपज की प्राप्ति हो रही है। कृषि उपज कार्य में प्रयुक्त होने वाले साध्य जैसे बीज, गोबर की खाद, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक, सिंचाई जल एवं विद्युत व्यय को सामग्री लागत में शामिल कर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

बीज :–

कृषि उपज उत्पादन प्रक्रिया में बीज की महती भूमिका होती है। एक उत्तम उपज को प्राप्त करने के लिए उन्नत बीज का होना परम आवश्यक होता है। हरित क्रांति परिमाणस्वरूप अधिकतम उपज प्रदान करने वाले बीजों का प्रचलन निरन्तर बढ़ रहा है। कृषि प्रधान भारत में उन्नत किस्म के बीजों के उपयोग से उच्च उत्पादन, उर्वरकों के अनुकुलतम उपयोग से अल्प समय में उपज की प्राप्ति होना तथा उत्पादन तकनीक के प्रयोग से कृषि उपज उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है साथ ही बहुफसलीय कृषि को भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

खरपतवार नाशक :–

हरित क्रांति के आगमन से कृषि उपज उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। कृषि उपज उत्पादन

में हुई आशातीत वृद्धि में खरपतवार नाशक की महती भूमिका है। यह दवाई मानव एवं पर्यावरण दोनों के लिए हानिकारक होती है, किन्तु पौध संरक्षण के लिए आवश्यक होने के कारण कृषक वर्ग द्वारा रासायनिक दवाइयों का उपयोग कृषि वैज्ञानिक द्वारा वर्णित विधि के अनुरूप कर रहे है।

खरपतवार को नष्ट करने के लिए जिले में रासायनिक दवाई उपयोगकर्ता कृषक वर्ग का बड़ा भाग बुवाई से पूर्व स्टाम्प, वासालिन, वैलर–32 जैसी रासायनिक दवाई का उपयोग कर रहे है। वहीं बुवाई के पश्चात रासायनिक दवाई उपयोगकर्ता कृषक वर्ग परश्युट, टर्गासुपर, धावा आदि रासायनिक खरपतवार नाशक का उपयोग कर रहे है।

वर्ष 1966 में कृषि प्रधान भारत में उदय हुई हरित क्रांति से पारम्परिक कृषि की प्रतिस्थापना औद्योगिक प्रौद्योगिकी से किए जाने लगी, जिससे कृषि विकास की दिशा और दशा में तेजी से सकारात्मक परिवर्तन हुआ। राष्ट्रीयकरण से पूर्व कृषि कार्य हेतु साख प्रदायगी व्यवस्था में बैंकों का कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं रहा है, किन्तु वर्ष 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण से कृषि साख के स्त्रोत में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। प्राचीन काल से ग्रामीण अंचल में विद्यमान कृषि साख के गैरसंस्थागत स्त्रोत साहूकारी साख व्यवस्था की कुरीतियों से कृषक वर्ग को मुक्त करने के लिए संस्थागत साख स्त्रोत पर विशेष बल प्रदान किया गया। साख के संस्थागत स्त्रोत बैंक, सहकारी संस्थाओं द्वारा कृषक वर्ग को न्यूनतम ब्याज दर पर कृषि साख उपलब्धता के परिमाणस्वरूप कृषि कार्य में नवीन तकनीकों को अपनाया गया, उन्नत बीजों का प्रयोग बढ़ा, सिंचाई के सर्वोत्म साधनों में वृद्धि हुई एवं अन्य ढ़ांचागत सुविधाओं में सकारात्मक परिवर्तन हुआ। इस प्रकार, कृषि कार्य पूर्व में परम्परागत विधियों से अधिकतम लागत में परिपूर्ण होता था। वह सस्ती एवं सुलभ संस्थागत स्त्रोत के द्वारा प्रदत्त साख सुविधा के माध्यम से न्यूनतम लागत में पूर्ण हो रहा है।

हरित क्रांति से पूर्व तक भारतीय कृषकों द्वारा कृषि कार्य के अंतर्गत खाद्यान्न उपज उत्पादन का कार्य किया जाता था। हरित क्रांति के साथ उदित हुए आधुनिक कृषि युग में कृषकों द्वारा खाद्यान्न उपज के अतिरिक्त अधिकाधिक लाभप्रद करने वाली व्यापारिक उपज उत्पादित करने का कार्य किया जा रहा है। शोध क्षेत्र रतलाम जिले में तिहलन उपज के अंतर्गत सोयाबीन की उपज एवं दलहन उपज के अंतर्गत चना की उपज सर्वाधिक उत्पादित की जाती है।

लाभदायक कृषि उपजों के प्रति कृषकों का बढ़ता रूझान :–

प्राचीन काल से ही कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधार स्तम्भ रही है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्या होने के कारण कृषि विकासशील भारत की राष्ट्रीय आय का मुख्य स्त्रोत, रोजगार एवं जीवन यापन का प्रमुख साधन, औद्योगिक विकास, विदेशी वाणिज्य एवं व्यापार का केन्द्र बिन्दु एवं आर्थिक विकास की कुंजी है। कृषि प्रधान भारत में हरित क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि के परम्परागत स्वरूप में सकारात्मक परिवर्तन हुआ। हरित क्रांति से पूर्व कृषि जीवन यापन करने का एकमात्र साधन था। हरित क्रांति के आगमन से कृषि कार्य जो सेवा का स्वरूप था पूर्णतः व्यावसायिक क्रियाओं में परिवर्तित हो गया है। उन्नतशील बीजों, रासायनिक खादों, उत्तम सिंचाई तथा यंत्रीकरण के प्रयोग से कृषि के क्षेत्रफल, कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है।

भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र रतलाम जिला मध्यप्रदेश राज्य के पश्चिम दिशा में स्थित एक सम्पन्न जिला है। जिले के कुल क्षेत्रफल भूमि का औसतन 60 प्रतिशत से अधिक भाग शुद्ध बोया गया क्षेत्र में वर्गीकृत है। वहीं जिले में द्वि–फसलीय औसतन क्षेत्र लगभग 52 प्रतिशत है। द्वि–फसलीय क्षेत्र में कृषक वर्ग प्राकृतिक जल से खरीफ की फसल व सिंचाई के माध्यम से रबी की फसल प्राप्त करते है। जिले की लगभग 70 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि कार्य को सम्पादित कर जीविका का संचालन कर रहे है।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध कार्य के इस सप्तम अध्याय में शोध विषय संबंधी समस्याएँ, पूर्व वर्णित समस्या के समाधान स्वरूप सुझाव, शोध प्रबंध से प्राप्त निष्कर्ष एवं निष्कर्षों की कसौटी पर परिकल्पनाओं का परीक्षण चार भागों में विभक्त कर अध्ययन किया गया है, जो बिन्दुवार प्रस्तुत है :–

समस्याएँ :–

विकासशील भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है। राष्ट्र के निवासियों का कृषि संबंधी कार्य से सदियों पुराना संबंध है जो वर्तमान में भी जीवंत है। हरित क्रांति के उदय एवं सरकारी प्रयासों से दीर्घकालीन अवधि से गतिहीनता प्राप्त कृषि की विषम दशाओं में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। परिमाणस्वरूप खाद्यान्न, अखाद्यान्न फसल के उत्पादन एवं उत्पादकता में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न फसल के क्षेत्र में भारत की अन्य विकासशील एवं अल्पविकसित राष्ट्र की अपेक्षा आत्मनिर्भरता की स्थिति विद्यमान है। यह कथन निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि अन्य विकसित राष्ट्र की अपेक्षा वर्तमान में बहुत पिछड़ी हुई है।

कृषि उपज उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत सरकार के प्रयास :–

स्वतंत्रता के पूर्व विकासशील भारत में कृषि की दशा अत्यन्त दयनीय थी। प्रति श्रमिक तथा प्रति हेक्टेयर उत्पादन की दर बहुत अल्प थी। राष्ट्र के निवासियों की भूख मिटाने तक का खाद्यान्न उत्पादित नहीं हो पाता था। स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र में खाद्यान्न की कमी को दूर करने के लिए कृषि उपज उत्पादन पर विशेष ध्यान दिया गया। सरकार ने पंचवर्षीय योजना के माध्यम से कृषि उपज उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के अद्वितीय प्रयास किए। वर्ष 1966 में हरित क्रांति के आगमन से भारतीय कृषि की दशा और दिशा दोनों में सकारात्मक परिवर्तन हुआ। सरकार द्वारा कृषि उपज उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए जो प्रयास किये गए, उनका संक्षिप्त वर्णन बिन्दुवार प्रस्तुत है –

(1) प्रति हेक्टेयर कृषि उपज उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए उन्नतशील बीजों के उपयोग को महता प्रदान की जा रही है। राष्ट्र में कृषक वर्ग को उन्नतशील बीज उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय बीज निगम तथा अनेक कृषि फार्मों की स्थापना की गई है। इसके अतिरिक्त वर्ष 1999–2000 में स्थापित बीज बैंक का संचालन राष्ट्रीय बीज निगम, भारतीय राज्य फार्म निगम, विभिन्न राज्यों के राज्य बीज निगम तथा निजी क्षेत्रों की बीज कम्पनियों के माध्यम से किया जा रहा है।

(2) कृषि अनुसन्धान एवं विकास हेतु कृषि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय तथा शोध संस्थाओं की स्थापना की गई। कृषि अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है।

(3) अपर्याप्त सिंचाई सुविधा को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र में लघु, मध्यम एवं बड़ी सिंचाई परियोजनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया गया। राष्ट्र के 63 महत्वपूर्ण जलाशयों की जल संरक्षण क्षमता में वृद्धि की गई है। सिंचाई क्षमता के सृजन और उसकी उपयोगिता में अभिवृद्धि करने हेतु कृषि संबंधी अभिप्रेरणा प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है।

–:: संदर्भ ग्रंथ सूची ::–

1. त्रिवेदी आर. एस. शुक्ला : ''रिसर्च मेथ्डोलॉजी'' 1999, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
2. शुक्ल डॉ. एस.एम एवं : ''व्यावसायिक सांख्यिकी'' 2010सहाय डॉ. शिवपूजन साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
3. नागर के.एन : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' 1986, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
4. अग्रवाल ए.एन., : ''भारतीय अर्थव्यवस्था, विकास एवं आयोजन'' 1993,वाइली इस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली
5. कुन्द्र ओमप्रकाश : ''मध्यप्रदेश विकास'', 2010–11, आर. पी. यूनिफाईड
6. डॉ गुप्ता आर.सी. : ''भारतीय उद्योगों का संगठन, साहित्य भवन आगरा,
7. शर्मा दिनेशचन्द्र, : ''भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था'', रमेश बुक डिपो, जयपुर
8. जैन पी.सी., : ''भारत मे कृषि विकास'', 1980 रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर,
9. राव पी.एस., : ''मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास'', 1972 कोण्डावार एस.एस.
10. जैन एस.सी, : ''वित्तीय प्रबंध'', 2010–11एस.बी.पी.डी., आगरा